एदं देव[1]सम्माइट्ठिणो अस्सिदूण उत्तं । वासद्दो किमट्ठं वुत्तो ? तिरिक्ख-मणुससम्माइट्ठिखेत्तसमुच्चयट्ठं । तं जहा – वेयण-कसाय-वेउव्विएहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो; तेजाहारपदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जस्स संखेज्जदिभागो; मारणंतिएण छचोद्दसभागा फोसिदा । एसो वासद्दसमुच्चिदत्थो ।

असंखेज्जा वा भागा ॥ २२५ ॥

एदं पदरगदकेवलिमस्सिदूण उत्तं । दंडगदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । एसो पढमवासद्देण समुच्चिदत्थो । कवाडगदेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो तत्तो संखेज्जगुणो वा, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । एसो बिदियवासद्दसमुच्चिदत्थो । एवं सव्वत्थ पदरगदकेवलिसुत्तट्ठियदोण्णं वासद्दाणमत्थो परूवेदव्वो ।

सव्वलोगो वा ॥ २२६ ॥

द्वारा कुछ कम आठ बटे चौदह भाग स्पृष्ट हैं । यह स्पर्शन क्षेत्र देव सम्यग्दृष्टियोंका आश्रयकर कहा गया है ।

शंका– सूत्रमें वा शब्दका ग्रहण किस लिये किया हैं ?

समाधान – तिर्यंच और मनुष्य सम्यग्दृष्टियोंके क्षेत्रका समुच्चय करनेके लिये सूत्रमें वा शब्दका ग्रहण किया है । वह इस प्रकार है – तिर्यंच व मनुष्य सम्यग्दृष्टियोंके द्वारा वेदना, कषाय और वैक्रियिक पदोंसे तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग, और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणा; तैजस और आहारक पदोंसे चार लोकोंका असंख्यातवां भाग, और अढाईद्वीपका संख्यातवां भाग; तथा मारणान्तिकसमुद्घातसे छह बटे चौदह भाग स्पृष्ट हैं । यह वा शब्दसे संगृहीत अर्थ हैं ।

अथवा, असंख्यात बहुभागप्रमाण क्षेत्र स्पृष्ट है ॥ २२५ ॥

यह कथन प्रतरसमुद्घातगत केवलीका आश्रयकर किया है । दण्डसमुद्घातगत केवलियों द्वारा चार लोकोंका असंख्यातवां भाग, और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पृष्ट है । यह प्रथम वा शब्दसे संगृहीत अर्थ है । कपाटसमुद्घातगत केवलियोंके द्वारा तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग या उससे संख्यातगुणा, तथा अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पृष्ट है । यह द्वितीय वा शब्दसे संगृहीत अर्थ है । इसी प्रकार सर्वत्र प्रतरसमुद्घातगत केवलियोंके स्पर्शनका निरूपण करनेवाले सूत्रोंमें स्थित दो वा शब्दोंका अर्थ करना चाहिये ।

अथवा, सर्व लोक स्पृष्ट है ॥ २२६ ॥

---

१. अ. क. प्रत्योः फोसिदं देव इति पाठः ।

एवं लोगपूरणमस्सिदूण भणिदं । वासद्दो उत्तसमुच्चयत्थो ।

उववादेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ २२७ ॥

सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ २२८ ॥

सुगमं, वट्टमाणप्पणादो ।

छचोद्दसभागा वा देसूणा ॥ २२९ ॥

देव-णेरइएहि मणुस्सेसुप्पज्जमाणेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो, एक्कारहरज्जुदीह-पणदालीसजोयणलक्खरुंदफोसणखेत्तस्स[1] उवलंभादो । ण च एत्तियमेत्तं चेवेत्ति णियमो अत्थि, अण्णस्स वि तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागमेत्तस्स उवलंभादो । एसो वासद्दत्थो । तिरिय-मणुस्सेहिंतो देवेसुप्पण्णेहि छचोद्दसभागा फोसिदा ।

यह सूत्र लोकपूरणसमुद्घातका आश्रय कर कहा गया है । वा शब्द पूर्वोक्त अर्थके समुच्चयके लिये है ।

उक्त सम्यग्दृष्टि जीवों द्वारा उपपादकी अपेक्षा कितना क्षेत्र स्पृष्ट है ? ॥ २२७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

सम्यग्दृष्टि जीवों द्वारा उपपादकी अपेक्षा लोकका असंख्यातवां भाग स्पृष्ट है ॥ २२८ ॥

यह सूत्र सुगम है, क्योंकि वर्तमान कालकी विवक्षा है ।

अथवा, अतीत कालकी अपेक्षा कुछ कम छह बटे चौदह भाग स्पृष्ट हैं ॥ २२९ ॥

मनुष्योंमें उत्पन्न होनेवाले देव-नारकियोंके द्वारा चार लोकोंका असंख्यातवां भाग और अढ़ाईद्वीपके असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पृष्ट है, क्योंकि, यहां ग्यारह राजु दीर्घ और पैंतालीस लाख योजन विस्तीर्ण स्पर्शन क्षेत्र पाया जाता है । और 'इतना मात्र ही क्षेत्र है' ऐसा नियम भी नहीं है, क्योंकि, अन्य भी तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग पाया जाता है । यह वा शब्दसे सूचित अर्थ है । तिर्यंच और मनुष्योंमेंसे देवोंमें उत्पन्न हुए सम्यग्दृष्टि जीवोंके द्वारा छह बटे चौदह भाग स्पृष्ट हैं ।

---

१. मु. प्रतौ -रुंदखेत्तस्स इति पाठः ।

खइयसम्माइट्ठी सत्थाणेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ २३० ॥

सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ २३१ ॥

सुगमं, वट्टमाणप्पणादो ।

अट्ठचोद्दसभागा वा[1] देसूणा ॥ २३२ ॥

सत्थाणत्थेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । एसो वासद्दत्थो । विहारवदिसत्थाणेण अट्ठचोद्दसभागा देसूणा फोसिदा ।

समुग्घादेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ २३३ ॥

सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ २३४ ॥

क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीवोंने स्वस्थान पदोंसे कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? ॥ २३० ॥

यह सूत्र सुगम है ।

क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीवोंने स्वस्थान पदोंसे लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ २३१ ॥

यह सूत्र सुगम है, क्योंकि, वर्तमान कालकी विवक्षा है ।

अथवा, उक्त जीवों द्वारा अतीत कालकी अपेक्षा कुछ कम आठ बटे चौदह भाग स्पृष्ट हैं ॥ २३२ ॥

स्वस्थानमें स्थित क्षायिकसम्यग्दृष्टियों द्वारा तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग, और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पृष्ट हैं । यह वा शब्दसे सूचित अर्थ है । विहारवत्स्वस्थानसे कुछ कम आठ बटे चौदह भाग स्पृष्ट हैं ।

समुद्घात पदोंसे क्षायिकसम्यग्दृष्टियों द्वारा कितना क्षेत्र स्पृष्ट है ? ॥ २३३ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

समुद्घात पदोंसे क्षायिकसम्यग्दृष्टियों द्वारा लोकका असंख्यातवां भाग स्पृष्ट है ॥ २३४ ॥

---

१. अ. ब. स. प्रतिषु वा इति पाठो नास्ति ।

सुगमं, वट्टमाणप्पणादो ।

अट्ठचोद्दसभागा वा देसूणा ॥ २३५ ॥

तेजाहारपदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो. अड्ढाइज्जस्स[1] संखेज्जदिभागो[2] फोसिदो । तिरिक्ख-मणुस्सेहि वेयण-कसाय-वेउव्विय-मारणंतियसमुग्घादेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । एसो वासद्दत्थो । देवेहि पुण वेयण-कसाय-वेउव्विय-मारणंतियसमुग्घादेहि अट्ठचोद्दसभागा देसूणा फोसिदा ।

असंखेज्जा वा भागा ॥ २३६ ॥

एदं पदरगदकेवलिखेत्तं पडुच्च भणिदं, तत्थ वादवलयं मोत्तूण सेसासेसलोगगदजीवपदेसाणमुवलंभादो । दंडगदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । एसो पढमवासद्देण सूइदत्थो । कवाडगदेहि तिण्हं लोगाणम-

---

यह सूत्र सुगम है, क्योंकि, वर्तमान कालकी विवक्षा है ।

अथवा, अतीत कालकी अपेक्षा कुछ कम आठ बटे चौदह भाग स्पृष्ट हैं ॥ २३५ ॥

तैजस और आहारक पदोंसे क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीवों द्वारा चार लोकोंका असंख्यातवां भाग, और अढाईद्वीपका संख्यातवां भाग स्पृष्ट है । तिर्यंच व मनुष्य क्षायिकसम्यग्दृष्टियों द्वारा वेदना, कषाय, वैक्रियिक और मारणान्तिकसमुद्घात पदोंसे तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग, और अढाईद्वीपका असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पृष्ट है । यह वा शब्दसे सूचित अर्थ है । परन्तु देव क्षायिकसम्यग्दृष्टियों द्वारा वेदना, कषाय, वैक्रियिक और मारणान्तिकसमुद्घात पदोंसे कुछ कम आठ बटे चौदह भाग स्पृष्ट हैं ।

अथवा, असंख्यात बहुभाग स्पृष्ट हैं ॥ २३६ ॥

यह सूत्र प्रतरसमुद्घातगत केवलीके क्षेत्रकी अपेक्षा कहा गया है, क्योंकि, प्रतरसमुद्घातमें वातवलयको छोडकर शेष समस्त लोकमें व्याप्त जीवप्रदेश पाये जाते हैं । दण्डसमुद्घातगत केवलियोंके द्वारा चार लोकोंका असंख्यातवां भाग और अढाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पृष्ट है । यह प्रथम वा शब्दसे सूचित अर्थ है । कपाटसमुद्घातगत

---

१ अ. प्रतौ अड्ढाइज्जादो इति पाठः । २. अ. आ. प्रत्योः असंखेज्जदिभागो इति पाठः ।

संखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो तत्तो संखेज्जगुणो वा अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो। एसो बिदियवासद्दसमुच्चिदत्थो।

सव्वलोगो वा ॥ २३७ ॥

एदं लोगपूरणगदकेवलिं पडुच्च परूविदं। एत्थ वासद्दो उत्तसमुच्चयत्थो।

उववादेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ २३८ ॥

सुगमं।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ २३९ ॥

एत्थ वट्टमाणपरूवणाए खेत्तभंगो। अदीदे तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो।

वेदगसम्माइट्ठी सत्थाण-समुग्घादेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ २४० ॥

केवलियोंके द्वारा तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग या उससे संख्यातगुणा, और अढाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पृष्ट है। यह द्वितीय वा शब्दसे संगृहीत अर्थ है।

अथवा, सर्व लोक स्पृष्ट है ॥ २३७ ॥

यह सूत्र लोकपूरणसमुद्घातगत केवलीकी अपेक्षासे कहा गया है। यहां वा शब्द पूर्वोक्त अर्थके समुच्चयके लिये है।

उपपादकी अपेक्षा क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीवों द्वारा कितना क्षेत्र स्पृष्ट है ? ॥ २३८ ॥

यह सूत्र सुगम है।

उपपादकी अपेक्षा क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीवों द्वारा लोकका असंख्यातवां भाग स्पृष्ट है ॥ २३९ ॥

यहां वर्तमानप्ररूपणा क्षेत्रप्ररूपणाके समान है। अतीत कालमें तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग, और अढाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पृष्ट है।

वेदकसम्यग्दृष्टि जीव स्वस्थान और समुद्घात पदोंसे कितना क्षेत्र स्पर्श करते हैं ? ॥ २४० ॥

सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो || २४१ ||

सुगमं वट्टमाणप्पणादो ।

अट्ठचोद्दसभागा वा देसूणा || २४२ ||

सत्थाणेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । एसो वासद्देण समुच्चिदत्थो । विहारवदिसत्थाण-वेयण-कसाय-वेउव्विय-मारणंतिएहि अट्ठचोद्दसभागा देसूणा फोसिदा ।

उववादेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ।। २४३ ।।

सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो || २४४ ||

सुगमं, वट्टमाणप्पणादो ।

यह सूत्र सुगम है ।

वेदकसम्यग्दृष्टि जीव स्वस्थान और समुद्घात पदोंसे लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श करते हैं ।। २४१ ।।

यह सूत्र सुगम है, क्योंकि, वर्तमान कालकी विवक्षा है ।

अथवा, अतीत कालकी अपेक्षा वेदकसम्यग्दृष्टि जीवों द्वारा कुछ कम आठ बटे चौदह भाग स्पृष्ट हैं ।। २४२ ।।

स्वस्थान पदसे तीन लोकोंका असंख्याततां भाग, तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग, और अढाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पृष्ट है । यह वा शब्दसे संगृहीत अर्थ है । विहारवत्स्वस्थान, वेदना, कषाय, वैक्रियिक और मारणान्तिक पदोंसे कुछ कम आठ बटे चौदह भाग स्पृष्ट हैं ।

उक्त वेदकसम्यग्दृष्टियों द्वारा उपपाद पदसे कितना क्षेत्र स्पृष्ट है ? ।।२४३।।

यह सूत्र सुगम है ।

वेदकसम्यग्दृष्टियों द्वारा उपपाद पदसे लोकका असंख्यातवां भाग स्पृष्ट है ।। २४४ ।।

यह सूत्र सुगम है, क्योंकि, वर्तमान कालकी विवक्षा है ।

छचोद्दसभागा वा देसूणा ॥ २४५ ॥

देव-णेरइएहिंतो आगंतूण वेदगसम्मादिट्ठिमणुस्सेसुप्पण्णेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो। णवरि देवेहि तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो फोसिदो। एसो वासद्दसमुच्चिदत्थो। तिरिक्ख-मणुस्सेहिंतो देवेसुप्पज्जमाणवेदगसम्माइट्ठीहि छचोद्दसभागा फोसिदा।

उवसमसम्माइट्ठी सत्थाणेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ २४६ ॥

सुगमं।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ २४७ ॥

सुगमं वट्टमाणप्पणादो।

अट्ठचोद्दसभागा वा देसूणा ॥ २४८ ॥

सत्थाणेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो,

---

अथवा, अतीत कालकी अपेक्षा कुछ कम छह बटे चौदह भाग स्पृष्ट हैं ॥२४५॥

देव-नारकियोंमेंसे आकर मनुष्योंमें उत्पन्न हुए वेदकसम्यग्दृष्टियों द्वारा चार लोकोंका असंख्यातवां भाग और अढाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पृष्ट है। विशेष इतना है कि देवों द्वारा तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग स्पृष्ट है। यह वा शब्दसे संगृहीत अर्थ है। तिर्यंच और मनुष्योंमेंसे देवोंमें उत्पन्न होनेवाले वेदकसम्यग्दृष्टियों द्वारा छह बटे चौदह भाग स्पृष्ट हैं।

उपशमसम्यग्दृष्टि जीवों द्वारा स्वस्थान पदोंसे कितना क्षेत्र स्पृष्ट है? ॥२४६॥

यह सूत्र सुगम है।

उपशमसम्यग्दृष्टि जीवों द्वारा स्वस्थान पदोंसे लोकका असंख्यातवां भाग स्पृष्ट है ॥ २४७ ॥

यह सूत्र सुगम है, क्योंकि, वर्तमान कालकी विवक्षा है।

अथवा, अतीत कालकी अपेक्षा कुछ कम आठ बटे चौदह भाग स्पृष्ट हैं ? ॥२४८॥

स्वस्थान पदसे उक्त जीवों द्वारा तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकका

अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । एसो वासद्दसमुच्चिदत्थो । विहारवदिसत्थाणेण अट्ठचोद्दसभागा फोसिदा, उवसमसम्माइट्ठीणं देवाणमट्ठचोद्दसभागंतरे विहारं पडि विरोहाभावादो ।

समुग्घादेहि उववादेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ॥ २४९ ॥

सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ २५० ॥

एत्थ अदीद-वट्टमाणकालेसु मारणंतिय-उववादपरिणएहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो, माणुसखेत्तम्मि चेव मरंताणं उवसमसम्माइट्ठीणमुवलंभादो । वेयण-कसाय-वेउव्वियसमुग्घादाणमुवसमसम्माइट्ठीणं देवाणमट्ठचोद्दसभागा किण्ण परूविदा ? ण, एवं परूविज्जमाणे सासणस्स मारणंतियसमुग्घादस्स वि अट्ठचोद्दसभागा होंति त्ति संदेहो मा होहदि त्ति तण्णिराकरणट्ठं ण परूविदा ।

संख्यातवां भाग, और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पृष्ट है । यह वा शब्दसे संगृहीत अर्थ है । विहारवत्स्वस्थानकी अपेक्षा आठ बटे चौदह भाग स्पृष्ट हैं, क्योंकि, उपशमसम्यग्दृष्टि देवोंके आठ बटे चौदह भागोंके भीतर विहारमें कोई विरोध नहीं है ।

उक्त उपशमसम्यग्दृष्टियों द्वारा समुद्घात व उपपाद पदोंसे कितना क्षेत्र स्पृष्ट है ? ॥ २४९ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उपशमसम्यग्दृष्टियों द्वारा उक्त पदोंसे लोकका असंख्यातवां भाग स्पृष्ट है ॥ २५० ॥

यहां अतीत व वर्तमान कालोंमें मारणान्तिकसमुद्घात व उपपाद पदोंसे परिणत उपशमसम्यग्दृष्टियों द्वारा चार लोकोंका असंख्यातवां भाग, और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पृष्ट है, क्योंकि, मानुषक्षेत्रमें ही मरणको प्राप्त होनेवाले उपशमसम्यग्दृष्टि पाये जाते हैं ।

शंका– वेदना, कषाय और वैक्रियिक समुद्घातकी अपेक्षा उपशमसम्यग्दृष्टि देवोंके आठ बटे चौदह भाग यहां क्यों नहीं कहे ?

समाधान – नहीं, क्योंकि, ऐसा निरूपण करनेपर 'सासादनसम्यग्दृष्टिके मारणान्तिकसमुद्घातकी अपेक्षा भी आठ बटे चौदह भाग होते हैं' ऐसा संदेह न हो, इस प्रकार उसके निराकरणके लिये उक्त आठ बटे चौदह भागोंका निरूपण नहीं किया ।

सासणसम्माइट्ठी सत्थाणेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥२५१॥

सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ २५२ ॥

सुगमं, वट्टमाणप्पणादो ।

अट्ठचोद्दसभागा वा देसूणा ॥ २५३ ॥

सत्थाणेण तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । एसो वासद्दसमुच्चिदत्थो । विहारवदिसत्थाण-परिणएहि अट्ठचोद्दसभागा फोसिदा

समुग्घादेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ २५४ ॥

सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ २५५ ॥

सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंने स्वस्थान पदोंसे कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? ॥ २५१ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंने स्वस्थान पदोंसे लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ २५२ ॥

यह सूत्र सुगम है, क्योंकि, वर्तमान कालकी विवक्षा है ।

अथवा, अतीत कालकी अपेक्षा उक्त जीवोंने कुछ कम आठ बटे चौदह भाग स्पर्श किये हैं ॥ २५३ ॥

स्वस्थानकी अपेक्षा तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग और अढाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पृष्ट है । यह वा शब्दसे संगृहीत अर्थ है । विहारवत्स्व-स्थान पदसे परिणत सासादनसम्यग्दृष्टियों द्वारा आठ बटे चौदह भाग स्पृष्ट हैं ।

उक्त जीवों द्वारा समुद्घात पदोंसे कितना क्षेत्र स्पृष्ट है ? ॥ २५४ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उक्त जीवों द्वारा समुद्घात पदोंसे लोकका असंख्यातवां भाग स्पृष्ट हैं ॥२५५॥

सुगमं वट्टमाणप्पणादो ।

अट्ठ-बारहचोद्दसभागा वा देसूणा ॥ २५६ ॥

वेयण-कसाय-वेउव्वियसमुग्घादेहि अट्ठचोद्दसभागा फोसिदा । मारणंतियसमुग्घादेहि बारहचोद्दसभागा फोसिदा, मेरुमूलादो हेट्ठोवरि पंच-सत्तरज्जुआयामेण मारणंतियस्सुवलंभादो ।

उववादेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ २५७ ॥

सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ २५८ ॥

सुगमं वट्टमाणप्पणादो ।

एक्कारहचोद्दसभागा वा देसूणा ॥ २५९ ॥

कुदो ? ण छट्ठिपुढविणेरइयाणं सासणगुणेण पंचिंदियतिरिक्खेसु उप्पज्जमाणाणं पंचचोद्दसभागा उववादेण लब्भंति, देवेहिंतो पंचिंदियतिरिक्खेसुप्पज्जमाणाणं छचोद्दस-

---

यह सूत्र सुगम है, क्योंकि, वर्तमान कालकी विवक्षा है ।

अथवा, अतीत कालकी अपेक्षा कुछ कम आठ और बारह बटे चौदह भाग स्पृष्ट हैं ॥ २५६ ॥

वेदना, कषाय और वैक्रियिक समुद्घातोंसे आठ बटे चौदह भाग स्पृष्ट हैं । मारणान्तिकसमुद्घातसे बारह बटे चौदह भाग स्पृष्ट हैं, क्योंकि मेरुमूलसे नीचे पांच और ऊपर सात राजु आयामसे मारणान्तिकसमुद्घात पाया जाता है ।

उक्त सासादनसम्यग्दृष्टि जीवों द्वारा उपपादकी अपेक्षा कितना क्षेत्र स्पृष्ट है ? ॥ २५७ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उक्त जीवों द्वारा उपपाद पदसे लोकका असंख्यातवां भाग स्पृष्ट है ॥ २५८ ॥

यह सूत्र सुगम है, क्योंकि, वर्तमान कालकी विवक्षा है ।

अतीत कालकी अपेक्षा कुछ कम ग्यारह बटे चौदह भाग स्पृष्ट हैं ॥ २५९ ॥

शंका – उक्त जीवोंने कुछ कम ग्यारह बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन कैसे किया है ?

समाधान – नहीं, सासादनगुणस्थानके साथ पंचेन्द्रिय तिर्यंचोंमें उत्पन्न होनेवाले छठी पृथिवीके नारकियोंके पांच बटे चौदह भाग उपपादसे प्राप्त होते हैं, तथा देवोंसे

---

१. मु. प्रतौ वा इति पाठो नास्ति ।

भागा लब्भंति, एदेसिं समासो एक्कारहचोद्दसभागा सासणोववादफोसणखेत्तं होदि त्ति । उवरि सत्त चोद्दसभागा किण्ण लद्धा ? ण, सासणाणमेइंदिएसु उववादाभावादो । मारणंतियमेइंदिएसु गदसासणा तत्थ किण्ण उप्पज्जंति ? ण, मिच्छत्तभंगूण[1] सासणगुणे उप्पत्तिविरोहादो ।

सम्मामिच्छाइट्ठीहि सत्थाणेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥२६०॥

सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ २६१ ॥

सुगमं, वट्टमाणप्पणादो ।

अट्ठचोद्दसभागा वा देसूणा ॥ २६२ ॥

तिर्यंचोंमें उत्पन्न होनेवाले जीवोंके छह बटे चौदह भाग प्राप्त होते हैं, इन दोनोंके जोडरूप ग्यारह बटे चौदह भागप्रमाण सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंका उपपादकी अपेक्षा स्पर्शनक्षेत्र होता है ।

शंका- ऊपर सात बटे चौदह भाग क्यों नही प्राप्त होते ?

समाधान - नही, क्योंकि सासादनसम्यग्दृष्टियोंकी एकेन्द्रियोंमें उत्पत्ति नहीं है ।

शंका - एकेन्द्रियोंमें मारणान्तिकसमुद्घातको प्राप्त हुए सासादनसम्यग्दृष्टि जीव उनमें उत्पन्न क्यों नहीं होते ?

समाधान - नही, क्योंकि मिथ्यात्व गुणस्थानको छोडकर उक्त जीवोंका सासादन गुणस्थान के साथ एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न होनेका विरोध है ।

सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवों द्वारा स्वस्थान पदोंसे कितना क्षेत्र स्पृष्ट है ? ॥२६०॥

यह सूत्र सुगम है ।

उक्त जीवों द्वारा स्वस्थान पदोंसे लोकका असंख्यातवां भाग स्पृष्ट है ॥ २६१ ॥

यह सूत्र सुगम है, क्योंकि, वर्तमान कालकी विवक्षा है ।

अथवा, अतीत कालकी अपेक्षा उक्त जीवों द्वारा कुछ कम आठ बटे चौदह भाग स्पृष्ट हैं ॥ २६२ ॥

---

१. मु. प्रती मिच्छत्तमागंतूण इति पाठः ।

सत्थाणेण तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । एसो वासद्दत्थो । विहारवदिसत्थाणेण अट्ठचोद्दसभागा वा फोसिदा । सेसं सुगमं ।

समुग्घाद--उववादं णत्थि ॥ २६३ ॥

कुदो ? सम्मामिच्छत्तगुणेण मरणाभावादो । वेयण-कसाय-वेउव्वियसमुग्घादाण-मेत्थ परूवणं किण्ण कदं ? ण, तेसिं[2] पहाणत्ताभावादो ।

मिच्छाइट्ठी असंजदभंगो ॥ २६४ ॥

सुगमभेदं ।

सण्णियाणुवादेण सण्णी सत्थाणेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ २६५ ॥

सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ २६६ ॥

स्वस्थान पदसे तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग, और अढाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पृष्ट है । यह वा शब्दसे सूचित अर्थ है । तथा विहारवत्स्व-स्थानसे आठ बटे चौदह भाग स्पृष्ट हैं । शेष सूत्रार्थ सुगम है ।

सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके समुद्घात और उपपाद पद नहीं होते हैं ॥ २६३ ॥

क्योंकि, सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थानके साथ मरणका अभाव है ।

शंका– वेदना, कषाय और वैक्रियिक समुद्घातोंकी यहां प्ररूपणा क्यों नही की गई है ?

समाधान – नहीं, क्योंकि उनकी प्रधानता नहीं है ।

मिथ्यादृष्टि जीवोंके स्पर्शनका निरूपण असंयत जीवोंके समान है ॥ २६४ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

संज्ञिमार्गणानुसार संज्ञी जीवोंने स्वस्थान पदोंसे कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? ॥ २६५ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

संज्ञी जीवोंने स्वस्थान पदोंसे लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ २६६ ॥

---

२ अ. स. प्रती कदं, तेसि

सुगमं, वट्टमाणविवक्खादो ।

अट्ठचोद्दसभागा वा देसूणा ॥ २६७ ॥

सत्थाणेण तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । एसो वासद्दत्थो । विहारवदिसत्थाणेण अट्ठचोद्दसभागा फोसिदा ।

समुग्घादेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ २६८ ॥

सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ २६९ ॥

सुगमं, वट्टमाणप्पणादो ।

अट्ठचोद्दसभागा वा देसूणा ॥ २७० ॥

वेयण-कसाय-वेउव्वियसमुग्घादेहि अट्ठचोद्दसभागा फोसिदा, देवाणं विहरंताणं तिण्हमेदेसिमुवलंभादो ।

यह सूत्र सुगम है, क्योंकि, वर्तमान कालकी विवक्षा है ।

अथवा, अतीत कालकी अपेक्षा कुछ कम आठ बटे चौदह भाग स्पर्श किये हैं ॥ २६७ ॥

स्वस्थान पदसे संज्ञी जीवोंने तीन लोकोंके असंख्यातवें भाग, तिर्यग्लोकके संख्यातवें भाग और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणे क्षेत्रका स्पर्श किया है । यह वा शब्दसे सूचित अर्थ है । विहार-वत्स्वस्थानसे आठ बटे चौदह भागोंका स्पर्श किया है ।

समुद्घातोंकी अपेक्षा संज्ञी जीवों द्वारा कितना क्षेत्र स्पृष्ट है ? ॥ २६८ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

संज्ञी जीवों द्वारा समुद्घात पदोंसे लोकका असंख्यातवां भाग स्पृष्ट है ॥२६९॥

यह सूत्र सुगम है, क्योंकि, वर्तमान कालकी विवक्षा है ।

अथवा, अतीत कालकी अपेक्षा कुछ कम आठ बटे चौदह भाग स्पृष्ट हैं ॥ २७० ॥

वेदना, कषाय, और वैक्रियिक समुद्घातोंकी अपेक्षा आठ बटे चौदह भाग स्पृष्ट हैं, क्योंकि, विहार करते हुए देवोंके ये तीनों समुद्घात पाये जाते हैं ।

---

१ अप्रतौ ' लोगस्स संखेज्जदिभागो ' काप्रतौ ' लोगसंखेज्जदिभागो ' इति पाठः ।

सव्वलोगो वा ॥ २७१ ॥

मारणंतियसमुग्घादं पडुच्च एसो णिद्देसो । तसकाइएसु सण्णीसु मुक्कमारणंतियसण्णी जीवे पडुच्च बारहचोद्दसभागा देसूणा फोसिदा । एसो वासद्दत्थो ।

उववादेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ २७२ ॥

सुगमं ।

लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ २७३ ॥

सुगमं, वट्टमाणप्पणादो ।

सव्वलोगो वा ॥ २७४ ॥

सण्णीसुप्पण्णअसण्णीणं सव्वलोगोवलंभादो । सण्णीणं सण्णीसुप्पज्जमाणाणं बारहचोद्दभागा होंति । सम्माइट्ठीणं छचोद्दसभागा । एसो वासद्दत्थो । एवमण्णत्थ वि अउत्तट्ठाणे वासद्दाणमत्थो वत्तव्वो ।

अथवा, सर्व लोक स्पृष्ट है ॥ २७१ ॥

यह कथन (असंज्ञी जीवोंमे किये गये) मारणान्तिकसमुद्घातकी अपेक्षासे । त्रसकायिक संज्ञी जीवोंमें मारणान्तिक समुद्घातको करनेवाले संज्ञी जीवोंकी अपेक्षा कुछ कम बारह बटे चौदह भाग स्पृष्ट हैं । यह वा शब्दसे सूचित अर्थ हैं ।

उपपादकी अपेक्षा संज्ञी जीवों द्वारा कितना क्षेत्र स्पृष्ट है ? ॥ २७२ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

उपपादकी अपेक्षा संज्ञी जीवों द्वारा लोकका असंख्यातवां भाग स्पृष्ट है ॥ २७३ ॥

यह सूत्र सुगम है, क्योंकि, वर्तमान कालकी विवक्षा है ।

अथवा, अतीत कालकी अपेक्षा सर्व लोक स्पृष्ट है ॥ २७४ ॥

क्योंकि, संज्ञियोंमें उत्पन्न हुए असंज्ञी जीवोंके सर्व लोक क्षेत्र पाया जाता है । किन्तु संज्ञियोंमें उत्पन्न होनेवाले संज्ञी जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र बारह बटे चौदह भाग है । सम्यग्दृष्टि संज्ञियोंका उपपादक्षेत्र छह बटे चौदह भागप्रमाण है । यह वा शब्दसे सूचित अर्थ है । इसी प्रकार अन्यत्र भी अनुक्त स्थानमें वा शब्दोंका अर्थ कहना चाहिये ।

असण्णी मिच्छाइट्ठीभंगो ॥ २७५ ॥

सुगमं ।

आहाराणुवादेण आहारा सत्थाण-समुग्घादि-उववादेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ २७६ ॥

सुगमं ।

सव्वलोगो वा ॥ २७७ ॥

एदं देसामासियसुत्तं । तेण विहारवदिसत्थाणेण अट्ठचोद्दसभागा फोसिदा । वेउव्विएण तिण्हं लोगाणं संखेज्जदिभागो फोसिदो । सेसं सुगमं ।

अणाहारा केवडियं खेत्तं फोसिदं ? ॥ २७८ ॥

सुगमं ।

सव्वलोगो वा ॥ २७९ ॥

एदं पि सुगमं ।

एवं फोसणाणुगमो त्ति समत्तमणिओगद्दारं

असंज्ञी जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र मिथ्यादृष्टियोंके समान है ॥ २७५ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

आहारमार्गणानुसार आहारक जीवोंने स्वस्थान, समुद्घात और उपपाद पदोंसे कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? ॥ २७६ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

आहारक जीवोंने उक्त पदोंसे सर्व लोक स्पर्श किया है ॥ २७७ ॥

यह देशामर्शक सूत्र है । अत एव (इसके द्वारा सूचित अर्थ-) विहारवत्स्वस्थानकी अपेक्षा आहारक जीवोंने आठ बटे चौदह भागोंका स्पर्श किया है । वैक्रियिकसमुद्घातसे तीन लोकोंके संख्यातवें भागका स्पर्श किया है । शेष सूत्रार्थ सुगम है ।

अनाहारक जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? ॥ २७८ ॥

यह सूत्र सुगम है ।

अनाहारक जीवोंने सर्व लोक स्पर्श किया है ॥ २७९ ॥

यह सूत्र भी सुगम है ।

इस प्रकार स्पर्शनानुगम अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।